दवा-प्रतिरोधी टीबी का प्रकोप बढ़ रहा है

ताज़ा अनुसंधान से पता चला है कि टीबी के दवा-प्रतिरोधी मामलों की संख्या बढ़ती जा रही है। बेलारूस के मिंस्क नामक स्थान पर किए गए अध्ययन से पता चला है कि टीबी के नए मरीज़ों में से 35 प्रतिशत बहुऔषधि प्रतिरोधी यानी मल्टी ड्रग रेज़िस्टेंट (एमडीआर) हैं। मिंस्क के अध्ययन से संकेत मिलता है कि विश्व में एमडीआर टीबी का प्रकोप विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमानों से अधिक है।

वैसे एमडीआर टीबी को लेकर पक्के आंकड़ों का अभाव है। टीबी एक बैक्टीरिया-जनित रोग है और मरीज़ को एंटीबायोटिक दवाइयों का सेवन लंबी अवधि तक करना होता है। यदि मरीज़ इन दवाइयों का सेवन उचित ढंग से न करे तो प्रतिरोध उभरता है और अन्य लोगों में भी फैल सकता है। 2010 में टीबी के 57 लाख नए या पुनः संक्रमण के मामले रिकॉर्ड हुए थे। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि इनमें से मात्र 5 प्रतिशत ही एमडीआर थे। मगर मिंस्क के आंकड़े बताते हैं कि एमडीआर कहीं ज़्यादा व्यापक है।

एमडीआर टीबी के लिए कुछ विशेष दवाइयों का इस्तेमाल करना होता है। ये दवाइयां महंगी होने के अलावा विषैली भी होती हैं। यदि मरीज़ इन दवाइयों को भी ठीक से न ले तो अत्यंत दवा-प्रतिरोधी टीबी सिर उठाता है जिसका इलाज नामुमकिन हो जाता है। मिंस्क में पाया गया कि एमडीआर टीबी के सारे मामलों में से करीब 15 प्रतिशत अत्यंत प्रतिरोधी टीबी के मामले थे। इस अध्ययन की मुखिया एलेना स्क्राहेना के मुताबिक यह काफी गंभीर स्थिति है।

इसका एक परिणाम तो यही होगा कि ऐसे मरीज़ों का इलाज नहीं हो पाएगा। दूसरी ओर, इन्हें मुक्त घूमने-फिरने दिया गया तो अत्यंत प्रतिरोधी रोग अन्य लोगों में भी फैलेगा। अमीर देशों में ऐसे मरीज़ों को अलग-थलग रखा जाता है, मगर यह काफी महंगा है। कई देशों में ऐसे मरीज़ों के लिए कोई व्यवस्था नहीं होती। हमारी पूरी स्वास्थ्य व्यवस्था इलाज के लिए बनी है। इसमें मात्र देखभाल के लिए सुविधाओं का अभाव है। अत्यंत प्रतिरोधी टीबी मरीज़ों के मामले में शायद यही सुविधा ज़रूरी है। ***(स्रोत फीचर्स)***